केला की खेती

- खनिज पदार्थों, पोषक तत्वों, विटामिन A, B, C, तथा D पर्याप्त मात्रा उपलब्ध
- जन्म स्थान एशिया के भारत, मलाया, इंडोचाइना, और थाईलैंड इत्यादि के उष्ण भाग
- उष्ण-प्रदेशीय फल

- गर्म और तर जलवायु
- पाले को सहन करने की क्षमता
- तेज हवा से पौधों को हानि।

प्रजातियाँ

फल के लिए उगाई जाने वाली किस्मे

❖ पूवन	❖ लाल बेलची
❖ चम्पा	❖ हरी छाल
❖ अमृत सागर	❖ मालभोग
❖ बसराई ड्वार्फ	❖ मोहन भोग
❖ सफ़ेद बेलची	❖ रोबस्टा

शाकभाजी के लिए उगाई जाने वाली किस्मे

❖ हजारा	❖ मुन्थन हरी छाल
❖ अमृतमान	❖ मुठिया
❖ चम्पा	❖ कैम्पियरगंज
❖ काबुली	❖ रामकेला
❖ बम्बई	

भूमि की तैयारी या गड्ढो की तैयारी

- गहरी, उपजाऊ, अधिक जल धारण करने की शक्ति रखने वाली दोमट भूमि
- अधोभूस्तारी या पुत्तियों का रोपण गड्ढे अथवा नालियों में करना चाहिए।

- मई के महीने में गड्ढे तैयार करना चाहिए।
- पौधों की रोपाई के लिए 2 से 3 मीटर की दूरी पर 50X50X50 सेंटीमीटर गड्ढे तैयार करते है।

पौध रोपण का समय एवं विधि

- तीन माह की तलवारनुमा पुत्तियाँ
- पुत्तियों का रोपण वर्षा ऋतु में जुलाई से लेकर सितम्बर तक
- सिचाई की पर्याप्त सुविधा उपलब्ध होने पर पौधे फरवरी-मार्च लगाये।

- रोग रहित अधोभूस्तारी या पुत्तियाँ
- पुत्तियों को किसी विश्वसनीय व प्रमाणित पौधशाला से ही लेना चाहिए।

खाद एवं उर्वरक

उर्वरक :

- नत्रजन : 300 ग्राम / पौधा
- फास्फोरस : 100 ग्राम / पौधा
- पोटाश : 300 ग्राम / पौधा

- फास्फोरस की आधी मात्रा रोपाई के समय तथा शेष आधी मात्रा रोपाई के बाद
- नत्रजन की पूरी मात्रा को पांच भागो में बाँट कर अगस्त, सितम्बर अक्टूबर, फरवरी तथा अप्रैल माह में
- पोटाश को तीन भागो में बाँट कर सितम्बर, अक्टूबर तथा अप्रैल माह में

सिचाई

- ग्रीष्म ऋतु में 15-20 दिन के अंतर पर
- जाड़े की ऋतु में 25-30 दिन के अंतर पर
- जाड़े की ऋतु में सिचाई से केले में पाले द्वारा हानि से बचाया जा सकता है।

खरपतवार नियंत्रण
कटाई, छटाई व सहारा देना

- खेत में 3-4 बार निराई-गुड़ाई की जाती है।
- रोपण के दो माह के अंदर ही बगल से नई पुत्तियाँ निकलती है
- घौर के कारण पौधों को गिरने से बचाने के लिए सहारा देना चाहिए।

रोग नियंत्रण

केले की फसल में –

- पनामा रोग
- बांची टॉप
- एन्थ्रेक्नोज
- हार्टराट रोग

पनामा रोग :

- फफूंदी जनित बीमारी
- रोग में सर्वप्रथम नीचे की पुरानी पत्तियों पर हल्की पीली धारियां बनती है
- कुछ समय बाद पूरी पत्ती पीली होकर टूटकर लटक जाती है और बाद में पौधा सूख जाता है।

रोकथाम

- रोग प्रतिरोधी प्रजातियों को उगाना चाहिए
- जिस बाग में यह रोग लग गया हो वहां पर 4-5 वर्षो तक केले की खेती नहीं करनी चाहिए।
- प्रभावित पौधों को सकर सहित उखाड़कर नष्ट कर देना चाहिए।

बांची टॉप :

- रोग में पत्तियां छोटी तथा पतली हो जाती है, किनारे मुड़ जाते है।
- सिरे की पत्तियां गुच्छे जैसी हो जाती है तथा पौधे छोटे रह जाते है।

रोकथाम

- प्रभावित पौधों को सकर सहित उखाड़कर नष्ट कर देना चाहिए।
- प्रभावित बाग से सकर नहीं लेना चाहिए।

एन्थ्रेक्नोज :

- इस रोग में सर्वप्रथम पत्तियों पर काले धब्बे बनते है।
- फूल काले पड़कर गिर जाते है।
- फलो पर भी काले रंग के धब्बे बनते है जिसके कारण फल सिकुड़कर काले पड़ जाते है

रोकथाम

- प्रभावित पौधों को नष्ट कर देना चाहिए।
- कापर आक्सीक्लोराइड का 0.3% के घोल का छिड़काव करना चाहिए, प्रथम छिड़काव फूल आने के 2 सप्ताह पूर्व तथा दूसरा छिड़काव 3 माह बाद

हार्टराट :

- फफूंदी जनित बीमारी है।
- अंदर की पत्तियां गल जाती है और नई पत्तियों के निकलने में रूकावट होती है तथा फूल नहीं निकलते है।

रोकथाम

- खेत में उचित जल निकास होना चाहिए
- कापर आक्सीक्लोराइड का 0.3 % के घोल का छिड़काव I प्रथम छिड़काव फूल आने के 2 सप्ताह पूर्व तथा दूसरा छिड़काव 3 माह बाद

कीट नियंत्रण

केले की फसल में -

- तना बेधक
- फल छेदक
- सूत्र कृमि कीट

तना बेधक :

- सुंडियां पौधे के तने में छेद करती है । जिससे तने में सड़ाव हो जाता है।
- उग्र प्रकोप होने पर पौधे सूख जाते है।

रोकथाम

- कार्बाफ्युरान अथवा फोरेट या थीमेट 10 जी. दानेदार कीटनाशी को प्रति पौधा 25 ग्राम प्रयोग करना चाहिए

फल छेदक :

- कीट फली में नीचे की ओर से छिद्र करता है तथा अंदर फली में सुरंग बना देता है जिसके कारण फली सड़ जाती है।

रोकथाम

- मिथाइल-ओ-डिमेटान 25 ई.सी. 1.25 मिलीलीटर एक लीटर पानी में घोलकर छिड़काव

सूत्र कृमि :

- कीट जड़ो पर आक्रमण करता है तथा जड़ो पर छोटे-छोटे गुच्छे बन जाते है।
- इसकी रोकथाम के लिए मई-जून में बागो की जुताई करनी चाहिए।

कटाई एवं उपज

- फूल निकलने के बाद लगभग 25-30 दिन में फलियां निकल आती है
- पूरी फलियां निकलने के 100-140 दिन बाद फल तैयार हो जाते है
- 250-300 कुंतल प्रति हेक्टेयर उपज